पद १६७

(राग: कानडा - ताल: त्रिवट)

माधव मुकुंद मुरारे येई।।ध्रु.।। माणिक म्हणे पुरुषोत्तमा। गरुडासहित संगे रमा। धावुनि येउनि भेट देई।।१।।